बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो

(कंज़ूल ईमान, सूरह फातिर, आयत नं.-6)

आयत ए क़ुरआन और शैतान

अनवर रज़ा खान अज़हरी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व याकता है, तू हमेशा से है, हमेशा के लिए है। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब कहलाने वाला है। या अल्लाह तू मेरा खुदा , मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला हर दौर में निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाउं, नबिए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नत को अपनाउ और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाउं, ऐ मेरे रब एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपनी कुदरत वाली हाथ से बनाया और उनका औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपना नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम इस जहां में कोई नही।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो उस नबी के आअल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिसने तुझे राजी किया।

इस किताब में क्या है?

इस किताब में अल्लाह पाक कुरआन के आयतों के जरिए अपने बन्दो को शैतान का हकिकत बताया है। शैतान से सावधान रहने का तरिका बताया है , शैतान इंसान का दुश्मन है, कैसा है, क्यों है, कब से है, कब तक है, और शैतान किस तरह से दुश्मनी करता है, शैतान का हथियार क्या है, शैतान क्या चाहता और इंसान किया करता है सब बताया गया है, बेसक अल्लाह अपने बन्दो पर बहुत मेहरबान है लेकिन बन्दा बहुत नाफरमान है। अल्लाह नाफरमान बन्दो को शैतान की हकीकत जानने की तौफिक दे ताकि बन्दा नाफरमानी करना छोड़ दे।

ये किताब किस नियत से पढ़े?

- शैतान की हकीकत जानकर शैतान का मुखालफत करने के नियत से
- शैतान का कमजोरी जानकर शैतान से जेहाद करने के नियत से
- शैतान ईमान का लूटेरा है, शैतान से ईमान बचाने के नियत से
- शैतान गुनाह कराता है, गुनाहो से बचने के नियत से
- शैतान दुनिया की तरफ ले जाता है, दुनिया नहीं आख़िरत की तरफ जाने की नियत
- शैतानी काम को छोड़ कर, इस्लामी काम करने की नियत से
- गुनाहो से तौबा करके नेकी की तरफ कदम बढ़ाने की नियत से
- शैतानी परेशानी से निजात पाने के नियत से

उनवान फेहरिस्त

आयत 27 शैतान जिन्नाती और ईंसानी दोनो में है

आयत 28 शैतान का बात मानने वाला मुशरिक है

आयत 29 शैतान के कदमो पर न चलों

आयत 30 शैतान बोला मैं उससे बेहतर हूं

आयत 31 शैतान और रहमान से बात चीत

आयत 32 शैतान तुम्हे फितने न डाल दे .....

आयत 33 शैतान को सरपरस्त बना लिया .....

आयत 34 शैतान उसके पिछे लग गया .....

आयत 35 शैतान से अल्लाह की पनाह ......

आयत 36 शैतान ख्याल की ठेस लगती है .....

आयत 37 शैतान उन्हें गुमराही में खिचते है ....

आयत 38 शैतान और नापाकी ...

आयत 39 शैतान ने उनके काम भले कर दिखाए.....

आयत 40 शैतान ने उसे भुला दिया

आयत 41 शैतान ने दो भाईयों में दुश्मनि करा दी ...

आयत 42 शैतान क्या कहेगा ....

आयत 43 शैतान से महफूज.....

आयत 44 शैतान, रहमान और फरिस्तें....

आयत 45 शैतान का वादा ....

आयत 46 शैतान से बचो....

आयत 47 शैतान से अल्लाह की पनाह....

आयत 48 शैतान का कब्जे में....

आयत 49 शैतान का भाई....

आयत 50 शैतान फसाद डाला .....

आयत 51 : शैतान गुरूर किया

आयत 52 : शैतान इंसान का पीस डालेगा

आयत 53 : शैतान के कहने पर चलने वाला जहन्नमी है

आयत 80 : शैतान दुनिया में धोखा देता है

आयत 81 : शैतान को दुश्मन समझना चाहिए

आयत 82 : शैतान को न पूजो

आयत 83 : शैतान ने बहुतों बहका दिया

आयत 84 : शैतान और रहमान

आयत 85 : शैतान ने घमण्ड किया

आयत 86 : शैतान बोला मैं बेहतर हूं

आयत 87 : शैतान जन्नत से निकाला गया

आयत 88 : शैतान पर कयामत तक लानत

आयत 89 : शैतान ने मोहलत मांगा

आयत 90 : शैतान को मोहलत मिला

आयत 91 : शैतान को कयामत तक मोहलत दिया गया।

आयत 92 : शैतान इंसानों को गुमराह करने का वादा किया

आयत 93 : शैतान अल्लाह के नेक बन्दो को गुमराह नहीं कर सकता

आयत 94 : शैतान और उसके पेरोकार से जहन्नम भरा जाएगा

आयत 95 : शैतान को तैनात करता है

आयत 96 : शैतान अल्लाह के राह से रोकता है

आयत 97 : शैतान से काफिर क्या कहेगा

आयत 98 : शैतान दुनियावी ख्वावाहीस दिलाता है

आयत 99 : शैतान ने क्या कहा

आयत 100 : शैतान ईमान वालो का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।

आयत 101 : शैतान का गिरोह हार में है

आयत 102 : शैतान की कहावत हार में है

आयत 103 : शैतान का अजाब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आयत 1 शैतान के साथ

और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो यूं ही हंसी करते हैं

(सूरह बकरह, आयत न 14)

आयत 2 शैतान ने सज्दा न किया

याद करो जब हमने फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया सिवाए इबलीस (शैतान) के, कि मुन्किर हुआ और गुरूर किया और काफिर हो गया

(सूरह बकरह, आयत न. 34)

आयत 3 शैतान ने जन्नत से लगजिश दी

तो शैतान ने जन्नत से उन्हें (आदम अलैस्सिलाम को) लगजिश (डगमगाहट) दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया और हमने फरमाया नीचे उतरो आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक्त तक जमीन में ठहरना और बरतना है

(सूरह बकरह, आयत न. 36)

.

आयत 4 शैतान और दो फरिस्तें

उसके पैरो हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सल्तनत ए सुलैमान के जमाने में और सुलैमान ने कुफ्र न किया हाँ शैतान काफिर हुए लोगों को जादू सिखाते हैं और वह (जादू) जो बाबुल में दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर उतरा और वो दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक यह न कह लेते कि हम तो निरी आजमायश हैं तू अपना ईमान न खो तो उनसे सीखते वह जिससे जुदाई डालें मर्द और उसकी औरत में और उस से जरर (हानि) नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से और वो सीखते हैं जो उन्हें नुक सान देगा नफा न देगा और बेशक जरूर उन्हें मालूम है कि जिसने यह सौदा लिया आखरित में उसका कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज है वह जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेचीं किसी तरह उन्हें इल्म होता **(सूरह बकरह, आयत न. 102)**

आयत 5 शैतान के कदमों पर न चलो

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाखलि हो और शैतान के कदमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है

(सूरह बकरह, आयत न 208)

आयत 6 : शैतान को न मानो

कुछ जबरदस्ती नहीं दीन में बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए उसने बड़ी मजबूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है

(सूरह बकरह, आयत नं. 257)

आयत 7: शैतान तुम्हें अन्देशा (आशंका) दिलाता है

शैतान तुम्हें अन्देशा (आशंका) दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बेहयाई का और अल्लाह तुमसे वादा फरमाता है बख्शिश(इनाम) और फज्ल(कृपा) का और अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है

(सूरह बकरह, आयत न 268)

आयत 8 : शैतान से न डरो.....

वह तो शैतान ही है कि अपने दोस्तों से धमकाता है तो उनसे न डरो और मुझसे डरो अगर ईमान रखते हो

(सूरह इमरान, आयत नं.-175)

आयत 9 : शैतान दुश्मनों से आगे रहो ....

ऐ ईमान वालों सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी (चौकसी) करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि कामयाब हो

(सूरह इमरान, आयत नं.-200)

आयत 10: शैतान जिसका साथी हुआ

वो जो अपने माल लोगों के दिखावे को खर्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न कयामत पर और जिसका साथी शैतान हुआ तो कितना बुरा साथी है.

(सूरह निसा, आयत नं.-38)

आयत 11 : शैतान क्या चाहता है ......

क्या तुमने उन्हें न देखा जिनका दावा है कि वो ईमान लाए उसपर जो तुम्हारी तरफ उतरा और उसपर जो तुमसे पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनाएं और उनका तो हुक्म यह था कि उसे असलन न मानें और इबलीस यह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे

(सूरह निसा, आयत नं.-60)

आयत 12 : शैतान की राह में कुफ्फार लड़ते है .....

ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं और कुफ्फार शैतान की राह में लड़ते हैं तो शैतान के दोस्तों से लड़ो बेशक शैतान का दाव कमजोर है

(सूरह निसा, आयत नं.-76)

आयत 13 : शैतान के पीछे लग जाते ......

अगर तुमपर अल्लाह का फज्ल और उसकी रहमत न होती तो जरूर तुम शैतान के पीछे लग जाते

(सूरह निसा, आयत नं.-८३)

आयत 14 : शैतान तो ये चाहते हैं कि ......

वो (शैतान) तो ये चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफिर हो जाओ जैसे वो काफिर हुए तो तुम सब एकसे हो जाओ तो उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ जब तक अल्लाह की राह में घर बार न छोड़े फिर अगर वो मुंह फेरें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ कत्ल करो और उनमें किसी को न दोस्त ठहराओ न मददगार

(सूरह निसा, आयत नं.-89)

आयत 15 : शैतान की पूजा .....

ये शिर्क वाले अल्लाह के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औरतों को और नहीं पूजते मगर सरकश (बागी) शैतान को

(सूरह निसा, आयत नं.-117)

आयत 16 : शैतान इन्सानों को हिस्सा लेगा

जिस(शैतान) पर अल्लाह ने लाअनत की और (शैतान) बोला कसम है मैं जरूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहरा हुआ हिस्सा लूंगा

(सूरह निसा, आयत नं.-118)

आयत 17 : शैतान बहकाएगा और आरजुऐं दिलाएगा

कसम है मैं जरूर उन्हें बहका दुंगा और जरूर उन्हें आरजुऐं दिलाऊंगा और जरूर उन्हें कहूंगा कि वो चौपायों के कान चीरेंगे और जरूर उन्हें कहूंगा कि वो अल्लाह की पैदा की हुई चीजें बदल देंगे और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनाये वह सलीम टोटे में पड़ा

(सूरह निसा, आयत नं.-119)

आयत 18 : शैतान फरेब देता है .....

शैतान उन्हें वादे देता है और आरजूएं दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं देता मगर फरेब के

(सूरह निसा, आयत नं.-120)

आयत 19 : शैतान के मानने वालों काफिरो को दोस्त न

ऐ ईमान वालो काफिरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों के सिवा क्या यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिये सरिह हुज्जत कर लो

(सूरह निसा, आयत नं.-144)

तो यहूदियों के बड़े जुल्म के सबब हमने वो बाज सुथरी चीजें कि उनके लिये हलाल थीं उनपर हराम फरमा दीं और इसलिये कि उन्होंने बहुतों को अल्लाह की राह से रोका

(सूरह निसा, आयत नं.-160)

आयत 20 : शैतान ने अल्लाह के राह से रोका

ऐ ईमान वालो यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ वो आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उन्हीं में से है बेशक अल्लाह बे इन्साफों को राह नहीं देता

(सूरह माएदा, आयत नं.-51)

आयत 21 : शैतान के दोस्त यहुदी और मुस्रिक

जरूर तुम मुसलमानों का सबसे बढ़कर दुश्मन यहूदियों और मुश्रिकों को पाओगे

(सूरह माएदा, आयत नं.-82)

आयत 22 : शैतानी काम से बचते रहो

ऐ ईमान वालो शराब और जुआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फलाह पाओ

(सूरह माएदा, आयत नं.-90)

आयत 23 : शैतान दुशमनी कराना चाहता है

शैतान यही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा वे. शराब और जुए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोके तो क्या तुम बाज आए.

(सूरह माएदा, आयत नं.-91)

आयत 24 : शैतान इंसानो के काम भले कर दिखाए....

तो क्यों न हुआ कि जब उनपर (पिछली उम्मत) अजाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन उन के दिल तो सख्त हो गए और शैतान ने उनके काम उन की निगाह में भले कर दिखाए

(सूरह अनआम, आयत नं.-43)

आयत 25: शैतान भुलवा देता है .....

और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं तो उनसे मुंह फेर ले जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर जालिमों के पास न बैठ

(सूरह अनआम, आयत नं.-68)

आयत 26 : शैतान ने जमीन में राह भुला दी

शैतानों ने जमीन में राह भुला दी

(सूरह अनआम, आयत नं.-71)

आयत 27 : शैतान जिन्नाती और ईसानी दोनो में है

और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिन्नों में के शैतान कि उनमें एक दूसरे पर खुफिया डालता है बनावट की बात धोखे को और तुम्हारा रब चाहता तो वो ऐसा न करते तो उन्हें उनकी बनावटों पर छोड़ दो

(सूरह अनआम, आयत नं.-112)

आयत 28 : शैतान का बात मानने वाला मुशरिक है

और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया और वह बेशक नाफरमानी है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उनका कहना मानो तो उस वक्त तुम मुशरिक हो

(सूरह अनआम, आयत नं.-121)

आयत 29 शैतान के कदमो पर न चलों

और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ जमीन पर बिछे खाओ उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रोजी दी और शैतान के कदमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है

(सूरह अनआम, आयत नं.-142)

आयत 30 : शैतान बोला मैं उससे बेहतर हूं

और बेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक्शे बनाए फिर हमने मलाइका से फरमाया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस, यह सज्दे वालों में न हुआ फरमाया किस चीज ने तुझे रोका कि तूने सज्दा न किया जब मैंने हुक्म दिया था बोला मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया

आयत 31 : शैतान और रहमान के बीच वादा

फरमाया तू यहाँ से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां रहकर गुरूर करे निकल तू है जिल्लत वालों में

बोला मुझे फुरसत दे उस दिन (कयामत) तक कि लोग उठाए जाएं

फरमाया तुझे मोहलत है

बोला तो क सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं जरूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक में बैठूंगा

फिर जरूर मैं उनके पास आऊंगा उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाऐं और उनके बाएं से और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुजार न पाएगा

फरमाया यहाँ से निकल जा रद किया गया, रोंदा हुआ, जरूर जो उनमें से तेरे कहे पर चला मैं तुम सबसे जहन्नम भर दूंगा

और ऐ आदम तू और तेरा जोड़ा जन्नत में रहो तो उससे जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना कि हद से बढ़ने वालों में होगे

फिर शैतान ने उनके जी में खतरा डाला कि उनपर खोलदे उनकी शर्म की चीजे जो उनसे छुपी थीं और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसलिये मना फरमाया है कि कहीं तुम दो फरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले

और उनसे कसम खाई कि मैं तुम दोनो का खैर ख्वाह हूँ

तो उतार लाया उन्हें फरेब से फिर जब उन्होंने वह पेड़ चखा उनपर उनकी शर्म की चीजें खुल गईं और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे, और उन्हें उनके रब ने फरमाया क्या मैं ने तुम्हें इस पेड़ से मना न किया और न फरमाया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है

दोनों ने अर्ज की ऐ रब हमारे हमने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख्शे और हमपर रहम न करें तो हम जरूर नुकसान वालों में हुए

फरमाया उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन और तुम्हें जमीन में एक वक्त तक ठहरना और बरतना है

आयत 32 : शैतान तुम्हे फितने न डाल दे

ऐ आदम की औलाद खबरदार तुम्हें शैतान फितने (आजमाईस) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीजें उन्हें नजर पड़ीं, बेशक वह और उसका कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते बेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते

(सूरह, आराफ आयत नं.-27)

आयत 33 : शैतान को सरपरस्त बना लिया

एक फिरके (समुदाय)को राह दिखाई और एक फिरके की गुमराही साबित हुई उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानो को वली (सरपरस्त) बनाया और समझते यह हैं कि वो राह पर हैं

(सूरह, आराफ नं.-30)

आयत 34 : शैतान उसके पिछे लग गया .....

और ऐ मेहबूब उन्हें उसका अहवाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दीं तो वह उनसे साफ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया

(सूरह, आराफ नं.-175)

आयत 35 शैतान से अल्लाह की पनाह

और ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कौंचा दे तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वही सुनता जानता है

(सूरह, आराफ नं.-200)

आयत 36 शैतान ख्याल की ठेस लगती है .....

बेशक वो जो डरने वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी खयाल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक्त उनकी आँखें खुल जाती है

(सूरह, आराफ नं.-201)

आयत 37 : शैतान उन्हें गुमराही में खिचते है

और वो जो शैतानों के भाई हैं शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर कमी नहीं करते

(सूरह, आराफ नं.-202)

आयत 38 : शैतान और नापाकी ...

जब उसने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उसकी तरफ से चौन थी और आसमान से तुमपर पानी उतारा के तुम्हें उससे सुथरा करदे और शैतान की नापाकी तुमसे दूर फरमादे और तुम्हारे दिलों को ढारस बंधाए और उससे तुम्हारे क दम जमादे

(सूरह, अनफाल नं.-11)

आयत 39 : शैतान ने उनके काम भले कर दिखाए.....

और जबकि शैतान ने उनकी निगाह में उनके काम भले कर दिखाए और बोला आज तुमपर कोई शख्श गालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए उलटे पाँव भागा और बोला मैं तुमसे अलग हूँ मैं वह देखता हूँ जो तुम्हें नजर नहीं आता मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह का अजाब सख्त है

(सूरह, अनफाल नं.-48)

आयत 40 : शैतान ने उसे भुला दिया

और यूसुफ ने उन दोनों में से जिसे बचता समझा उससे कहा अपने रब बादशाह के पास मेरा जिक्र करना तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब बादशाह के सामने यूसुफ का जिक्र करे तो यूसुफ कई बरस और जेलखाने में रहा

(सूरह, यूसुफ नं.-42)

आयत 41 : शैतान ने दो भाईयों में दुश्मनि करा दी ...

और अपने माँ बाप को तख्त पर बिठाया और सब उसके लिये सिजदे में गिरे और यूसुफ ने कहा ऐ मेरे बाप यह मेरे पहले ख्वाब की ताबीर है बेशक उसे मेरे रब ने सच्चा किया, और बेशक उसने मुझपर एहसान किया कि मुझे कै द से निकाला और आप सब को गाँव से ले आया बाद इसके कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों

में नाचाकी (शत्रुता) करा दी थी, बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान करदे, बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है

(सूरह, यूसुफ नं.-100)

आयत 42 : शैतान क्या कहेगा ....

और शैतान कहेगा जब फैसला हो चुकेगा बेशक अल्लाह ने तुमको सच्चा वादा दिया था और मैं ने जो तुमको वादा दिया था वह मैं ने तुम से झूटा किया और मेरा तुम पर कुछ क ाबू न था मगर यही कि मैंने तुमको बुलाया तुमने मेरी मान ली तो अब मुझपर इल्जाम न रखो खुद अपने ऊपर इल्जाम रखो न मैं तुम्हारी फरियाद को पहुंच सकूं न तुम मेरी फरियाद को पहुंच सको, वह जो पहले तुमने मुझे शरीक ठहराया था मैं उससे सख्त बेजार हूँ बेशक जालिमों के लिये दर्दनाक अजाब है

(सूरह, इब्राहिम नं.-22)

आयत 43 शैतान से महफूज.....

और उसे हमने हर शैतान मरदूद से मेहफूज रखा

(सूरह, हिज्र नं.-17)

आयत 44 : शैतान और रहमान के बीच गुफ्तगू

और याद करो जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से फरमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है

(सूरह, हिज्र नं.-28)

तो जब मैं उसे ठीक कर लूं और उसमें अपनी तरफ की खास मोज्ज रूह फूंक लुं

(सूरह, हिज्र नं.-29)

तो उस के लिये सिजदे में गिर पड़ना तो जितने फरिश्ते थे सब के सब सिजदे में गिरे

(सूरह, हिज्र नं.-30)

सिवा इबलीस के, उसने सज्दा वालों का साथ न माना

(सूरह, हिज्र नं.-31)

फरमाया ऐ इबलीस तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों से अलग रहा

(सूरह, हिज्र नं.-32)

बोला मुझे जेबा (मुनासिब) नहीं कि बशर को सज्दा करूंजिसे तूने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी

(सूरह, हिज्र नं.-33)

फरमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है

(सूरह, हिज्र नं.-34)

और बेशक कयामत तक तुझपर लअनत है

(सूरह, हिज्र नं.-35)

बोला ऐ मेरे रब तु मुझे मुहलत दे उस दिन तक कि वो उठाए जाए

(सूरह, हिज्र नं.-36)

फरमाया तू उनमें है जिनको

(सूरह, हिज्र नं.-37)

उस मालूम वक्त के दिन तक मोहलत है

(सूरह, हिज्र नं.-38)

आयत 45 : शैतान का वादा

बोला ऐ रब मेरे कसम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें जमीन में भुलावे दूंगा और जरूर मैं उन सब को बेराह करूंगा

(सूरह, हिज्र नं.-39)

मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बन्दे है

(सूरह, हिज्र नं.-40)

फरमाया यह रास्ता सीधा मेरी तरफ आता है

(सूरह, हिज्र नं.-41)

बेशक मेरे बन्दों पर तेरा (शैतान का) कुछ काबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें

(सूरह, हिज्र नं.-41)

आयत 46 शैतान से बचो

और बेशक हर उम्मत में से हमने एक रसूल भेजा के अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो तो उन में किसी को अल्लाह ने राह दिखाई और किसी पर गुमराही ठीक उतरी तो जमीन में चल फिर कर देखो कैसा अंजाम हुआ झुटलाने वालों का

(सूरह, नहल, आयत नं.-36)

आयत 46 शैतान नेकी के नाम पर गुनाह कराता है

खु़दा की क सम हमने तुमसे पहले कितनी उम्मतों की तरफ रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कौतूक उनकी आँखों में भले कर दिखाए तो आज वही उनका रफीक है और उनके लिये दर्दनाक अजाब है

(सूरह, नहल, आयत नं.-63)

आयत 47 : शैतान से अल्लाह की पनाह

तो जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह मांगो शैतान मरदूद से बेशक उसका (शैतान का) कोई काबू उनपर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते है

आयत 48 : शैतान का कब्जा

उसका (शैतान का) काबू तो उन्हीं पर है जो उससे दोस्ती करते हैं और उसे शरीक ठहराते हैं

(सूरह, नहल, आयत नं.-98-100)

आयत 49 : शैतान का भाई

बेशक उड़ाने (फिजुलखर्ची) वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-27)

आयत 50 : शैतान फसाद डालता है

और मेरे बन्दों से फरमाओ वह बात कहें जो सबसे अच्छी हो बेशक शैतान उनके आपस में फसाद डाल देता है,बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-53)

आयत 51 : शैतान गुरूर किया

और याद करो जब हमने फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो उन सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के, बोला क्या मैं इसे सज्दा करूंजिसे तूने मिट्टी से बनाया

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-61)

आयत 52 : शैतान इंसान का पीस डालेगा

(शैतान) बोला देख तो जो यह तूने मुझसे इज्जत वाला रखा अगर तूने मुझे कयामत तक मुहलत दी तो जरूर मैं उसकी औलाद (इंसान) को पीस डालूंगा मगर थोड़ा

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-62)

आयत 53 : शैतान के कहने पर चलने वाला जहन्नमी है

फरमाया दूर हो तो उनमें जो तेरे कहने पर चलेगा तो बेशक सब का बदला जहन्नम है भरपूर सजा

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-63)

आयत 54 : शैतान धोखा देता है

और डिगा दे उनमें से जिसपर कुदरत पाए अपनी आवाज से और उन पर लाम बांध ला अपने सवारो और प्यादो का और उनका साझी हो मालों और बच्चों में और उन्हें वादा दे और शैतान उन्हें वादा नहीं देता मगर धोखे से

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-64)

आयत 55 : शैतान का काबू नही

बेशक जो मेरे बन्दे हैं उनपर तेरा कुछ काबू नहीं, और तेरा रब काफी है काम बनाने को

(सूरह, बनी इसराइल, आयत नं.-65)

आयत 56 : शैतान को दोस्त न बनाओ

और याद करो जब हमने फरिश्तो को फरमाया कि आदम को सज्दा करो तो सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के कि कौमे जिन्न से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया भला क्या उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो और वो तुम्हारे दुश्मन है जालिमों को क्या ही बुरा बदला मिला

(सूरह कहफ, आयत नं.-50)

आयत 57 : शैतान ने भुला दिया

बोला, भला देखिये तो जब हमने इस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका मजकुर करूं; और उसने तो समन्दर में अपनी राह ली अंचभा है

(सूरह कहफ, आयत नं.-63)

आयत 58 : शैतान रहमान का नाफरमान है

ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन बेशक शैतान रहमान का नाफरमान है

(सूरह मरियम, आयत नं.-44)

आयत 59 : शैतान का दोस्त

ऐ मेरे बाप में डरता हूँ कि तुझे रहमान का कोई अजाब पहुंचे तो तू शैतान का दोस्त हो जाए

(सूरह मरियम, आयत नं.-45)

आयत 60 : शैतान को घेर लाएंगे

तो तुम्हारे रब की कसम हम उन्हें और शैतानों को सबको घेर लाएंगे और उन्हें दोजख के आसपास हाजिर करेंगे, घुटनों के बल गिरे

(सूरह मरियम, आयत नं.-68)

आयत 61 : शैतान काफिरो पर मुसल्लत

क्या तुमने न देखा कि हमने काफिरों पर शैतान भेजे कि वो उन्हें खूब उछालते हैं

(सूरह मरियम, आयत नं.-83)

आयत 62 : शैतान बना इब्लीस

और जब हमने फरिश्तों से फरमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस उसने न माना

(सूरह ताहा, आयत नं.-117

आयत 63 : शैतान दुश्मन है

तो हमने फरमाया ऐ आदम बेशक यह (शैतान) तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो कि वो तुम दोनो को जन्नत से निकाल दे फिर तू मशक्कत में पड़े

(सूरह ताहा, आयत नं.-117)

आयत 64 : शैतान ने वसवसा दिया

तो शैतान ने उसे वसवसा दिया बोला ऐ आदम क्या में तुम्हें बतादूं हमेशा जीने का पेड़ तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया अब उनपर उनकी शर्म की चीजें जाहिर हुई और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे और आदम से अपने रब के हुक्म में लगजिश वाके हुई तो जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई

आयत 65 : शैतान के पीछे हो लेते है

और कुछ लोग वो हैं कि अल्लाह के मामले में झगड़ते हैं वे जाने बूझे और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं

(सूरह हज्ज, आयत नं.-3)

आयत 66 : शैतान कूदरती पर मिलावट करता है

और हमने तुमसे पहले जितने रसूल या नबी भेजे सब पर यह वाकेआ गुजरा है कि

जब उन्होंने पढ़ा तो शैतान ने उनके पढ़ने में लोगों पर कुछ अपनी तरफ से मिला दिया तो मिटा देता है अल्लाह उस शैतान के डाले हुए को फिर अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है

(सूरह हज्ज, आयत नं.-52)

आयत 67 : शैतान फित्ना डालता है

ताकि शैतान के डाले हुए को फित्ना कर दे उनके लिये जिनके दिलों में बीमारी है और जिनके दिल सख्त हैं और बेशक जालिम हैं धुर के झगड़ालू हैं

(सूरह हज्ज, आयत नं.-53)

आयत 67 : शैतान से अल्लाह की पनाह

और तुम अर्ज करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शैयातीन के वसवसों से और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वो मेरे पास आएं

(सूरह मोमिनून, आयत नं.-97,98)

आयत 68 : शैतान बेहयाई और बुरी बात बताएगा

ऐ ईमान वालो शैतान के कदमों पर न चलो, और जो शैतान के कदमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा और अगर अल्लाह का फज्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता हाँ अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे और अल्लाह सुनता जानता है

(सूरह नूर, आयत नं.-21)

आयत 69 : शैतान इन्सान को बहकाता है

बेशक उसने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से और शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है

(सूरह फुरकान, आयत नं.-29)

आयत 70 : शैतान का मददगार काफिर है

और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं जो उनका भला बुरा कुछ न करें और

काफिर अपने रब के मुकाबिल शैतान को मदद देता है

(सूरह फुरकान, आयत नं.-55)

आयत 71 : शैतान का मुसल्लत होना

क्या मैं तुम्हें बतादूँ कि किसपर उतरते हैं शैतान

(सूरह शुरा, आयत नं.-221)

आयत 72 : शैतान गुनाहगारो पर मुसल्लत होता है

उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनहगार पर

(सूरह शुरा, आयत नं.-222)

आयत 73 : शैतान झुठे है

शैतान अपनी सूनी हुई उनपर डालतें हैं और उनमें अक्सर झूटे हैं

(सूरह शुरा, आयत नं.-223)

आयत 74 : शैतान बुरा काम को अच्छा कर दिखया

मैं ने उसे और उसकी कौम को पाया कि अल्लाह को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनके कर्म उनकी निगाह में सवार कर उनको सीधी राह से रोक दिया तो वो राह नहीं पाते

(सूरह नमल, आयत नं.-24)

आयत 75 : शैतान दुश्मन है

और उस शहर में दाखलि हुआ जिस वक्त शहर वाले दोपहर के ख्वाब में बेखबर थे तो उसमें दो मर्द लड़ते पाए, एक मूसा के गिरोह से था और दूसरा उसके दुश्मनों से तो वह जो उसके गिरोह से था उसने मूसा से मदद मांगी उस पर जो उसके दुश्मनों से था, तो मूसा ने उसके घूंसा मारा तो उसका काम तमाम कर दिया कहा यह काम शैतान की तरफ से हुआ बेशक वह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला

(सूरह कसस, आयत नं.-15)

आयत 76 : शैतान ने गुनाह को भले कर दिखाए

और शैतान ने उनके कौतुक उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह से रोका और उन्हें सूझता था

(सूरह अनकबूत, आयत नं.-38)

आयत 77 : शैतान बाप दादा के जरिए से गुनाह कराता है

और जब उनसे कहा जाए उसकी पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं बल्कि हम तो उसकी पैरवी करेंगे जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे शैतान उनको दोजख के अजाब की तरफ बुलाता हो

(सूरह लूकमान, आयत नं.-२१)

आयत 78 : शैतान के पीछे हो लिए

और बेशक इबलीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया तो वो उसके पीछे हो लिये मगर एक गिरोह के मुसलमान था

(सूरह सबा, आयत नं.-20)

आयत 79 : शैतान को काबू मोमिनो पर नहीं

और शैतान का उनपर कुछ काबू न था मगर इसलिये कि हम दिखा दें कि कौन आखरित पर ईमान लाता है और कौन इससे शक में है, और तुम्हारा रब हर चीज पर निगहबान है

(सूरह सबा, आयत नं.-21)

आयत 80 : शैतान दुनिया में धोखा देता है

ऐ लोगो बेशक अल्लाह का वादा सच है तो हरगिज तुम्हें धोखा न दे दुनिया की जिन्दगी और हरगिज तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फरेब न दे वह (शैतान) बड़ा फरेबी

(सूरह फतिर, आयत नं.-5)

आयत 81 : शैतान इंसान का खुदा दुश्मन है

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिये बुलाता है कि दोजखियों में हो

(सूरह फतिर, आयत नं.-6)

आयत 82 : शैतान को दुश्मन समझना चाहिए

ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से एहद न लिया था कि शैतान को न पूजना बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है

(सूरह याशीन, आयत नं.-60)

आयत 83 : शैतान न बहुत से को बहका दिया

और बेशक उसने (शैतान ने) तुम में से बहुत सी खलकत को बहका दिया, तो क्या तुम्हें अक्ल न थी

(सूरह याशीन, आयत नं.-62)

आयत 84 : शैतान और रहमान

मगर इब्लीस ने उसने घमण्ड किया और वह था ही काफिरों में

आयत 85 : शैतान ने घमण्ड किया

फरमाया ऐ इब्लीस तुझे किस चीज ने रोका कि तू उसके लिये सज्दा करे जिसे मैं ने अपने हाथों से बनाया क्या तुझे घमण्ड आ गया या तू था ही घमण्डियों में

आयत 86 : शैतान बोला मैं बेहतर हूं

बोला मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से पैदा किया

आयत 87 : शैतान को जन्नत से निकाला गया

फरमाया तो जन्नत से निकल जा कि तू रांदा गया

आयत 88 : शैतान पर कयामत तक लानत

और बेशक तुझ पर मेरी लअनत है क़यामत तक

आयत 89 : शैतान ने मोहलत मांगा

बोला ऐ मेरे रब ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि उठाए जाएं

आयत 90 : शैतान को मोहलत मिला

फरमाया तो, तू मोहलत वालों में है

आयत 91 : शैतान को कयामत तक मोहलत दिया गया

उस जाने हुए वक्त के दिन तक

आयत 92 : शैतान इंसानों को गुमराह करने का वादा किया

बोला तेरी इज्जत की कसम जरूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा

आयत 93 : शैतान अल्लाह के नेक बन्दो को गुमराह नहीं करेगा

मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बन्दे हैं (उसे नहीं)

फरमाया तो सच यह है और मैं सच ही फरमाता हूँ

आयत 94 : शैतान और उसके पैरोकार से जहन्नम भरा जाएगा

बेशक मैं जरूर जहन्नम भर दूंगा तुझसे और उनमें से जितने तेरी पैरवी करेंगे सब से

(सूरह साद, आयत नं.-72-85)

आयत 95 : शैतान को तैनात करता है

और जिसे रतौंद आए रहमान के जिक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे

(सूरह जुखरूफ, आयत नं.-36)

आयत 96 : शैतान अल्लाह के राह से रोकता है

और बेशक वो शयातीन उनको राह से रोकते हैं और समझते यह हैं कि वो राह पर हैं

(सूरह जुखरूफ, आयत नं.-37)

आयत 97 : शैतान से काफिर क्या कहेगा

यहाँ तक कि जब काफिर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहेगा हाय किसी तरह मुझ में तुझ में पूरब पश्चिम का फासला होता तू क्या ही बुरा साथी है

(सूरह जुखरूफ, आयत नं.-38)

आयत 98 : शैतान दुनियादारी की ख्वाहीसात दिलाता है

बेशक वो जो अपने पीछे पलट गए बाद इसके कि हिदायत उनपर खुल चुकी थी शैतान ने उन्हें धोखा दिया और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई

(सूरह मोहमद, आयत नं.-25)

आयत 99 : शैतान ने क्या कहा

उसके साथी शैतान ने कहा हमारे रब मैं ने इसे सरकश न किया हाँ यह आप ही दूर की गुमराही में था

(सूरह काफ, आयत नं.-27)

आयत 100 : शैतान ईमान वालो का कुछ नही बिगाड़ सकता

वह मशविरत तो शैतान ही की तरफ से है इसलिये कि ईमान वालों को रंज दे और वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता बे-हुक्मे खुदा और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये **(सूरह मुजादला, आयत नं.-10**

आयत 101 : शैतान गिरोह हार में है

उन पर शैतान गालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुलादी, वो शैतान के गिरोह हैं, सुनता है बेशक शैतान ही का गिरोह हार में है

(सूरह मुजादला, आयत नं.-19

आयत 102 : शैतान की कहावत

शैतान की कहावत जब उसने आदमी से कहा कुफ्र कर, फिर जब उसने कुफ्र कर लिया, बोला मैं तुझसे अलग हूँ, मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहान का रब

(सूरह हस्र, आयत नं.-16)

आयत 103 : शैतान का आजाब

और बेशक हमने नीचे के आसमान को चिरागों से आरास्ता किया और उन्हें शैतानों के लिये मार किया और उनके लिये भड़कती आग का अजाब तैयार फरमाया

(सूरह मुल्क, आयत नं.-5

शैतान का मुसल्लत होना

"क्या मैं तुम्हें बतादूँ कि किसपर उतरते हैं शैतान उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनहगार पर"

(कंज़ुल ईमान : सूरह शुरा, आयत नं.-221, 222)

इस किताब में आप पढ़ेगे

इस्लाम और सुन्नत के खिलाफ ज़िदगी गुजारने वालो को शैतान किस तरह परेशान करके जहन्नम पहुंचा देता है

Google Me likhe ***"Paigame Aulia Library"***